**International Research Journal of Human Resource and Social Sciences**
**ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)**
**Impact Factor 7.924 Volume 11, Issue 05, May 2024**
**Website-** www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

# प्रेमचंद्र के कथा साहित्य में सामाजिक सन्दर्भ

चन्द्रकान्त
व्याख्याता हिन्दी साहित्य
सर्वोदय महिला महाविद्यालय
बागीदौरा, जिला बांसवाडा (राज.)

मनुष्य सृष्टि की एक खुबसुरत रचना है और वह रचना समाज में रहकर ही जीवन पुष्पित–पल्लवित होती है। मनुष्य के जीवन के तीनों चरण जन्मा जीवन और मृत्यु समाज में रहकर ही पूरे होते है अर्थात मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज के बिना इसकी कल्पना अधुरी है। समाज शास्त्र शब्द कोष के अनुसार–समाज मनुष्यों का एक समूह है जो कि अनेका महत्वपूर्ण लक्ष्यों की पूर्ति में सहभागी है। मुख्य रूप से स्वयं को बनाए रखने आर स्वयं को चिरस्थाई रखने के उद्देश्य की पूर्ति करता है। मैकाइवर और पेक ने समाज को सामाजिक संबंधों का जाल बताया है। इस प्रकार समाज व्यक्तियों का एक ऐसा समूह या संगठन है, जिसमे व्यक्ति परस्पर अपने अंतसंबंधों द्वारा एक–दूसरे से जुड़ा रहता है।

कथाकार प्रेमचंद भारतीय समाज का चित्रण करने वाले कथाकार है। इनके कथा साहित्य में भारतीय समाज के विविध संदर्भो का निरुपण हुआ है। भारत भौगोलिक विविधताओं वाला देश है। इनके कहानी साहित्य में भारत के विविध क्षेत्रों के भौगोलिक परिदृ"यों को चित्रित होने का अवसर मिला ह। इनके उपन्यासों और कहानियों में 18–19वीं शताब्दी के ब्रिटीशकालीन भारतीय जन–जीवन के पर्याप्त संदर्भ चित्रिए हुए है। मुख्य रूप से हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई समाज के संदर्भ इनके कथा साहित्य में व्यक्त हुए है।

**© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

प्रेमचन्द आजादी के पूर्व के ग्रामीण भारत के चितेरे कथाकार है। इनके उपन्यासों एवं कहानियों में ग्राम्य जीवन एवं परिवेश का यथार्थ चित्रण हुआ है। समाज के विविध सामाजिक संदर्भ इनके कथा साहित्य में व्यक्त हुए है। प्रेमचंद के 'वरदान' 'सेवासदन' 'प्रेमाश्रम' 'रगभूमि' 'कायाकल्प' 'गबन' 'कर्मभूमि' और गोदान उपन्यासों में तथा 'यही मेरी मातृभूमि' है। 'शाप' 'नेकी' 'बड़े घर की बेटो' अमावस्या की रात्रि, शंखनाद, अधेर, बाँका जमींदार, सिर्फ एक आवाज, पछतावा, विस्मृति, बेटी का धन, दो भाई, पंच–परमेश्वर, जुगनू की चमक, अपने फन का उन्माद, उपदेश, बलिदान, आत्माराम, लोकमत का सम्मान, पूर्व संस्कार, बौड़म, आभूषण, मुक्तिमार्ग, सभ्यता का रहस्य, चोरी, मंत्र, बहिष्कार, सद्गति, उन्माद, खेल, दो बैलों की कथा आदि कहानियों में ग्रामीण परिवेश तथा समाज का चित्रण हुआ है।

प्रेमचंद के वरदान उपन्यास में कथा नायिका विरजन के पात्रो के माध्यम से मझगांव नामक गांव की सामाजिक स्थितियां व्यक्त हुई हैं। इस उपन्यास में ग्रामीणों की दयनीय आर्थिक दशा और उनके रहन–सहन का यथार्थ चित्रण हुआ है, टूटे–फूट फूल के झोंपडे मिट्टी की दीवारे, घरों के सामने कूड़े–करकट के बड़े–बड़े ढेर, कीचड में लिपटी हुई भैंसे, दुर्बल गायें तो ये सब दृश्य देखकर तो जी चाहता है कि कहीं चली जाऊँ। मनुष्यों को देख तो उनकी शोचनीय दशा है। हड्डियां निकली हुई है। वे विपत्ति की मूर्तियां और दरिद्रता के जीवित चित्र ह। इतना ही नही इस उपन्यास में ग्रामीण जीवन से संबद्ध कृषि आधृत अर्थव्यवस्था का चित्रण भी हुआ हैं। खेत पक गए है, पर काटने में दो सप्ताह का विलंब हैं। मेरे द्वार पर से मीलों का दृश्य दिखाई देता है। गेहूं और जो के सुथरे खेतों के किनारे–किनारे कुसुम के अरण और केसर वर्ष पुष्पों की पंक्ति परम सुहावनी लगती हैं। तोत चतुर्दिक मंडराया करते हैं। विरजन के पत्रों के माध्यम से इस गांव की लोकपरंपराओ लोकवि"वासों, रीति–रिवाजों और पर्वो का भी उद्घाटन हुआ है।

ग्रामीण समाज में होली पर्व के अवसर पर मचाए जाने वाले हुड़दंग का चित्रण भी उल्लेखनीय हैं, सायंकाल में ही गांव में चहल पहल मचने लगी। नवयुवकों का एक दल हाथ में डफ लिए, अ"लील शब्द बकते द्वार–द्वार फेरी लगाने लगे। मुझे ज्ञात न था कि आज यहां

इतनी गालियां खानी पड़ेगी। इस प्रकार मझगांव नामक ग्राम के सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों के माध्यम से प्रेमचंद ने गामीण समाज की विविध स्थितियों का उद्घाटन किया है।

प्रेमाश्रम उपन्यास तो ग्रामीण जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक सभी संदर्भों को व्यक्त करता हैं। इस उपन्यास की शुरूआत ही प्रमचंद ने ग्रामीण परिवेश के चित्रण से की है, संध्या हो गई है, दिन भर के थके–माँदे बैल खेत से आ गए हैं। घरों के चूल्हे के काले बादल उठने लगे। लखनपुर में आज परगने के हाकिम की पड़ताल थी। गांव के नेतागण दिन–भर उनके घोड़े के पीछे–पीछे दौड़ते रहे थे। इस समय वह अलाव के पास बैठ हुए नारियल पी रहे है और हाकिमों के चरित्र पर अपना–अपना मत प्रकट कर रहे हैं। लखनपुर बनारस नगर से बारह मील उत्तर की ओर एक बड़ा गांव है। यहां अधिकांश कुर्मी और ठाकुरों की बस्ती हैं दो–चार घर अन्य जातियों के भी है। इस उपन्यास में प्रेमचंद्र ने अपने गृहनगर बनारस के समीपवर्ती ग्राम लखनपुर का चित्रण की किया है।

**शोषक प्रवृति का उजागर** – प्रेमचंद के कथा साहित्य में भारतीय जमींदारों महाजनों और अंग्रेजों द्वारा गरीब किसानों, दलितों पर अत्याचार–अनेक प्रसंग चित्रित हुए है। इसका कारण यह है कि प्रेमचंद आजादी से पूर्व के कथाकार थे, जिन्होंने तात्कालिन समाज में व्याप्त भारतीय जमीदारों, महाजनों और अंगज अधिकारियों के आतंक को अच्छी तरह से देखा–भोगा था। इनके 'प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि, गोदान, उपन्यासों और बांका जमींदार, पछतावा, बेटी का धन विध्वंस आदि कहानियों में उच्चवर्गीय चरित्रों की शोषक प्रवृत्ति का उदघाटन हुआ है।

**आर्थिक कठिनाईयो का चित्रण** – प्रेमचंद के कथा साहित्य में चित्रित मध्यवर्षीय समाज आर्थिक कठिनाइयों से जुझता चित्रित हुआ है। इनके रंगभूमि 'निर्मला' भवन उपन्यासों और गरीब की हाय, महातीर्थ, बोध, मृत्यु के पीछे, प्रारब्ध, गृहदाह, शांति, मोगे की घड़ी, चमत्कार, लॉटरी, दो बहने आदि कहानियों में मध्यम वर्ग की आर्थिक कठिनाइयों का निरूपण हुआ है।

**प्रेमचंद के कथा साहित्य में नारी चरित्र** – प्रेमचंद के कथा साहित्य में आजादी से पूर्व के भारतीय समाज में नारो को स्थिति का यथार्थ चित्रण हुआ है। यद्यपि भारतीय समाज में दलितों के साथ–साथ नारी जाति भी सदैव हासिए में रही है तथापि प्रेमचंद के कथा साहित्य में नारो जाति की महत्ता का प्रतिपादन हुआ है। इनके कथा साहित्य की नारो चरित्र जीवन में घोर उपेक्षा और यंत्रण झेलते हुए भी अपनी परिस्थितियों से हार नहीं मानती है और निरंतर संघर्ष करती चली जाती हैं। प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में नारो जीवन की कठिनाइयों, नारी जीवन की समस्याओं ओर उनके जीवन संघर्ष के स्वच्छ चित्र अंकित किए हैं। इनकी नारो चरित्र पुरुष प्रधान भारतीय समाज के विरुद्ध अपनी चेतना से आक्रोश व्यक्त करती दिखाई देती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –


1. समाज"ाास्त्र के सिद्धान्त पृ. 110
2. सेवा सदन पृ. 47
3. वरदान पृ. 68
4. प्रेमाश्रम पृ. 5
5. रंगभूमि पृ. 5, 65, 80
6. गबन पृ. 5
7. प्रेमचन्द कहानी रचनावली (खण्ड–1) पृ. 91
8. प्रेमचन्द कहानी रचनावली (खण्ड–2) पृ. 37
9. कर्मभूमि, पृ. 32
10. प्रेमचन्द कहानी रचनावली (खण्ड–3) पृ. 58
11. गोदान, पृ. 278
12. प्रेमचन्द कहानी रचनावली (खण्ड–4) पृ. 497